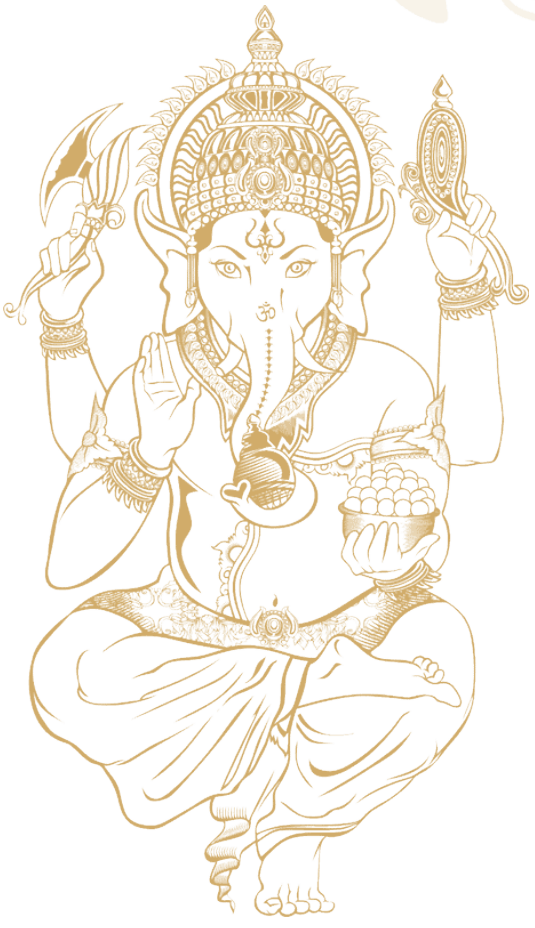

Dhaval

Bhagyashree

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121947103

पुल्लिंग :	लिंग	:	स्त्रीलिंग
18/05/1995 :	जन्म तिथि	:	25-26/12/2000
गुरुवार :	दिवस	:	सोम–मंगळवार
कला 07:45:00 :	जन्म समय	:	04:02:00 कला
घटी 04:51:35 :	जन्म समय(घटी)	:	52:31:41 घटी
India :	देश	:	India
Bhusaval :	स्थान	:	Savda
21:01:00 उत्तर :	अक्षांश	:	21:10:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व :	रेखांश	:	75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	:	82:30:00 पूर्व
कला -00:26:40 :	स्थानिक संस्कार	:	-00:26:08 कला
कला 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	:	00:00:00 कला
05:48:22 :	सूर्योदय	:	07:01:05
18:57:38 :	सूर्यास्त	:	17:51:43
23:47:42 :	लाहिरी अयनांश	:	23:51:58

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 12वर्ष 4मा 28दि		01:05:30	मिथु	लग्न	तुला	29:42:21	केतु 0वर्ष 2मा 12दि	
मंगळ		02:54:13	वृष	सूर्य	धनु	10:35:18	रवि	
15/10/2023		18:23:33	धनु	चंद्र	धनु	12:56:56	09/03/2021	
15/10/2030		02:53:49	सिंह	मंगळ	तुला	07:30:38	10/03/2027	
मंगळ	12/03/2024	22:59:32	वृष	बुध	धनु	10:39:49	रवि	27/06/2021
राहु	31/03/2025	18:30:23	वृश्चि व	गुरु व	वृष	08:51:47	चन्द्र	27/12/2021
गुरु	07/03/2026	07:33:46	मेष	शुक्र	मक	26:20:08	मंगळ	03/05/2022
शनि	15/04/2027	29:00:49	कुंभ	शनि व	वृष	01:00:57	राहु	28/03/2023
बुध	12/04/2028	11:40:29	तुला व	राहु व	मिथु	21:35:56	गुरु	14/01/2024
केतु	08/09/2028	11:40:29	मेष व	केतु व	धनु	21:35:56	शनि	26/12/2024
शुक्र	08/11/2029	06:36:45	मक व	हर्ष	मक	24:29:55	बुध	02/11/2025
रवि	16/03/2030	01:38:50	मक व	नेप	मक	11:15:07	केतु	10/03/2026
चन्द्र	15/10/2030	05:30:20	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	19:40:58	शुक्र	10/03/2027

लग्न–चलित

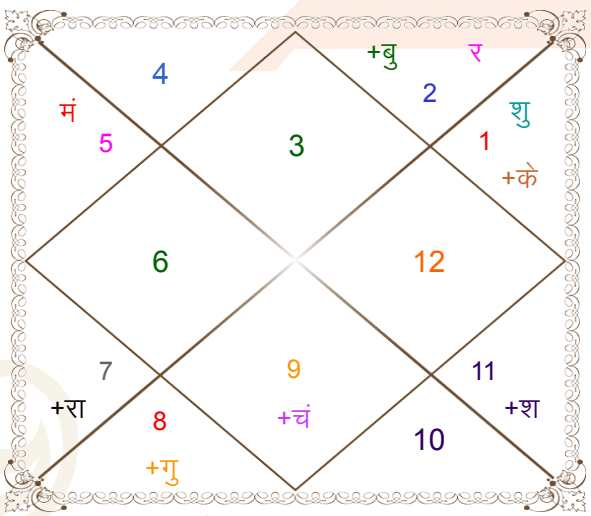

लग्न–चलित

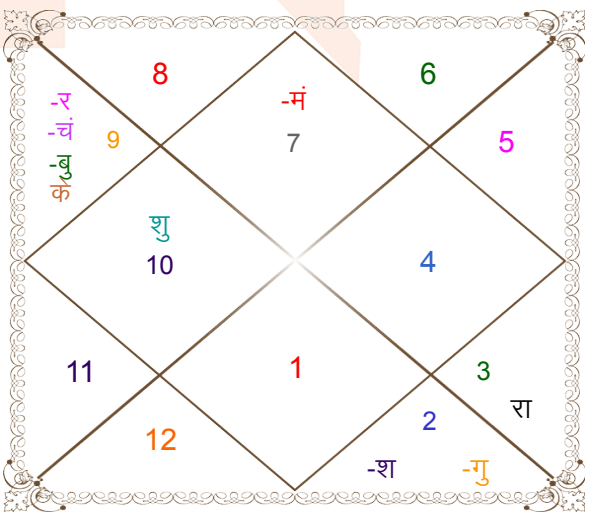

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	––	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	––	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	––	भाग्य
योनि	वानर	श्वान	4	2.00	––	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	––	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	आह	सामाजिकता
भकूट	धनु	धनु	7	7.00	––	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	––	स्वास्थ्य/संतान
एकुण :			**36**	**27.00**		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

Dhaval का वर्ग सर्प है तथा ठींहलौतमम का वर्ग उंदीर है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Dhaval और ठींहलौतमम का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Dhaval मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

ठींहलौतमम मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगळ Dhaval कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Dhaval तथा ठींहलौतमम में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।